बेगुनाहों का मोरबी हत्याकांड

स्वास्थ्य मंत्री जन्मदिन पार्टी में तथा मोदी चुनाव रैलियों में व्यस्त रहे

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फरवरी सन् 1879 में बनकर तैयार हुआ 220 मीटर लम्बा व सवा मीटर चौड़ा पुल 30 अक्टूबर को टूट गया। उस दिन सूर्यास्त के समय, लोहे की रस्सियों द्वारा थामे गये इस झुलते पुल पर 500 से अधिक लोग सूर्यास्त दृष्य का नजारा ले रहे थे कि पुल टूट गया। 400 से अधिक लोग नीचे बह रही मच्छू नदी में जा गिरे। इनमें अधिकांश महिलायें व बच्चे थे। कुछ समर्थ लोग टूटी एवं लटकती लोहे की रस्सियों व पुल की जाली को पकड़ कर तब तक लटके रहे जब तक बचाव दल न आये।

पानी की गहराई अपेक्षाकृत कम होने के चलते पुल से गिरने वाले लोग नदी के तल में बनी नुकीली चट्टानों से टकरा कर मारे गये या इतने जख्मी हो गये की तैर भी न पाये। परिणामस्वरूप 150 से अधिक शव निकाले जा चुके हैं, लगभग इतने ही लोग घायल अवस्था में हैं। बचाव दलों को मौके पर पहुंचने में करीब तीन घंटे लग गये। इस दौरान कुछ

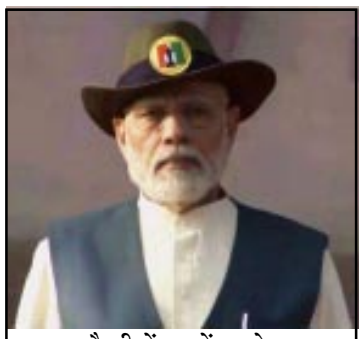

मौरबी में लाशों का ढेर, सजे-धजे मोदी अम्बा जी में

स्थानीय लोगों ने अपनी जान पर खेल कर कई लोगों की जान बचाई। इनमें वे दो मुस्लिम भाइयों ने अग्रणी भूमिका निभाते हुए सबसे अधिक लोगों को नदी से जिंदा बाहर निकाला, जिन्होंने डूबते लोगों से उनका धर्म तक नहीं पूछा। विदित है कि भाजपा ने पूरे गुजरात में साम्प्रदायिकता का जबरदस्त जहर घोल रखा है। हिन्दूओं के दिमाग में जबरदस्त मुस्लिम विरोध भर रखा है। इसके बावजूद इन दोनों भाईयों ने डूबते हुए लोगों को बचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

इस बर्बर नरसंहार के लिये नरेन्द्र मोदी पूरी तरह से जिम्मेवार हैं। इन्होंने ही 2004 में बतौर गुजरात के मुख्यमंत्री, जयसुख भाई पटेल को यह झूलता पुल लूट कमाई करने के लिये 15 साल के लिये सौंपा था। 2018 में अवधि समाप्त होने के बाद इन्हें फिर से नया ठेका दे दिया गया। इतना ही नहीं पुल की मुरम्मत व रख-रखाव के लिये दो करोड़ रुपये भी दिये। एक साधारण घड़ी साज की समझ रखने वाले इस पटेल को पुल की मुरम्मत की तो कोई समझ थी ही नहीं। लिहाजा पुल के रंग-रोगन के साथ-साथ पुल के फर्स पर भी मोटे एलूमिनियम की चादर बिछा दी गई जिससे पुल का भार बढ़ गया। लोहे की जिन रस्सियों पर पुल का वजन था उनमे लगे जंग व घिसाई की ओर ध्यान देने की बजाय पटेल ने मुरम्मत के नाम पर मिली रकम को डकार लिया।

पुल की क्षमता के अनुसार इस पर 100 व्यक्तियों को ही जाने का नियम था। इस पर जाने के लिये प्रति व्यक्ति 15 रुपये के टिकट लगती थी। पटेल ने मोटा मुनाफ़ा काटने के चक्कर में 600 लोगों को टिकट दे दिये। मीडिया से मिली खबरों के अनुसार टिकट खिड़की से 15 रुपये की टिकट 19 रुपये में बिक रही थी जो ब्लैक में 50 रुपये तक भी बिकी। मुनाफे की यही हवस इस हत्याकांड का कारण बना। इसके लिये दोषीगण बिल्कुल साफ़ नजर आ रहे हैं, लेकिन पुलिस ने गिरफ्तार किया मात्र तीन गार्डों, दो टिकट क्लर्कों तथा इनके एक मैनेजर को।

दोनों भाईयों को सलाम

हुसैन पठान एवं तौफीक ने मिलकर 85 लोगों की जान बचाई

नरेन्द्र मोदी ने अपना गुनाह तो क्या स्वीकार करना था पटेल को भी गिरफ्तार नहीं हाने दिया। लिपा-पोती करने के लिये जांच कमेटी बना दी गई है। प्रयास यह किये जाने की सम्भावना है कि पुल टूटने का कारण किसी आतंकवादी के मत्थे मढ़ा जाये। झूठ बोलने व झूठी कहानियां रचने में माहिर ये लोग कुछ भी कहानी रच कर आम जनता का ध्यान भटकाने का प्रयास कर सकते हैं। इन संघियों की संवेदन हीनता का एक नमूना तो वहां का स्वास्थय मंत्री ऋषिकेश पटेल स्वयं हैं। उक्त कांड की सूचना जब उन्हें दी गई तो वे अपने घर पर सारे परिवार व मित्रगणों के साथ अपने जन्मदिन का केक काट रहे थे। पूरे घर में जश्न का माहौल था। आतिशबाजी चल रही थी, रंग रेलियां मन रही थी। सूचना मिलने के बावजूद मंत्री ने जश्न छोड़कर मौका वारदात पर जाने की जरूरत नहीं समझी।

दूसरी ओर नरेन्द्र मोदी को जब यह सूचना दी गई तो वे एक चुनाव रैली को संबोधित करके सौगातें बांटने की तैयारी कर रहे थे। सूचना मिलने के बाबजूद कार्यक्रम को स्थगित नहीं किया गया। इतना ही नहीं अगले दिन प्रातः 10 बजे, सरदार बल्लब भाई पटेल के जन्मदिन पर एकता दिवस परेड की सलामी लेने पहुंच गये।

सलामी के बाद रंगा-रंग सांस्कृतिक प्रोग्राम भी यथावत चलता रहा। हां, मोदी ने अगले दिन मौका व वारदात पर जाने का फैसला किया तो मोरबी के गले-सड़े अस्पताल में, जहां उस वक्त 136 शव तथा इससे कहीं अधिक घायल परे थे, रंगाई-पुताई व मुरम्मत आदि का काम शुरू हो गया। रातों-रात अस्पताल को चकाचक कर दिया गया। फटे-पुराने बिस्तरों की जगह नये बिस्तर लगा दिये गये।

राजनेताओं के इशारे पर हो रहा था बड़ा भूमि घोटाला, समय रहते पकड़ा गया

भिवानी (म.मो.) सत्ता के शीर्ष स्थानों पर काबिज बड़े से बड़ा घोटाला करने में कोई मौका चूकने नहीं देते। इसी प्रयास में भिवानी शहर के बीचों-बीच चर्च की 12 हजार वर्ग गज़ जमीन को दलजीत और राजेश द्वारा हथियाने का मामला सामने आया है। इस जमीन की किमत 200 करोड़ रुपये से कहीं अधिक आंकी जा रही है जबकि इसकी रजिस्ट्री मात्र दो करोड़ रुपये में कराने का प्रयास किया गया था। इसके लिये करीब 12 लाख का स्टैम्प पेपर भी खरीदा गया। रजिस्ट्री के लिये आवश्यक दस्तावेजों की जगह फ़र्जी दस्तावेज भी तैयार कराये गये थे।

अधिकारियों के इशारे पर 5 सितम्बर 2022 को रजिस्ट्री क्लर्क विकास ने नव नियुक्त नायब तहसीलदार आलमगीर के हफ्ते में इस रजिस्ट्री को रिकॉर्ड में चढ़ा दिया। शाम को जब नायब तहसीलदार फील्ड ड्यूटी से लौटे तो क्लर्क विकास ने उनके हस्ताक्षर हेतु कागजात प्रस्तुत किये। नायब तहसीलदार ने जब काग़जों को उलट-पुलट कर देखा तो वे तुरन्त घोटाले को समझ गये। मामला उपायुक्त नरेश नरवाल के सामने लाया गया तो उन्होंने लिख दिया कि नायब तहसीलदार अपने विवेक से काम करे।

कुछ हफ्तों तक मामला ठंडे बस्ते में पड़ा रहा। दूसरी ओर शहर के जागरूक नागरिकों की ओर से इसे लेकर काफ़ी चर्चायें होने लगी। एक सेवा निवृत आईएएस अधिकारी सुरेश कुमार गोयल ने पत्र लिखकर इस घोटाले को न केवल जिला स्तर के बल्कि राज्य स्तर के उच्चाधिकारियों तक पहुंचा दिया। मामला इस कदर उछल जाने के चलते रजिस्ट्री क्लर्क को निलम्बित कर दिया गया। तहसीलदार, रजिस्ट्री क्लर्क, वसीका नवीस तथा खरीदने व बेचने वालों के विरुद्ध पुलिस द्वारा फ़जीवाड़े का मुकदमा दर्ज कर दिया गया।

गौरतलब है कि इतना बड़ा स्कैंडल कर पाना उन लोगों के वश का नहीं जिनके विरुद्ध पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। ये तो मात्र छोटी मछलियां है, बड़े मगमच्छ तो पर्दे के पीछे से खेल खेलते हैं। यद्यपि किसी बड़े मगरमच्छ का नाम तो सामने नहीं आ रहा है लेकिन चर्चा में स्थानीय विधायक तथा एक मंत्री का नाम चल रहा है।

समस्याओ का हल नहीं, केवल उद्घाटन करना जानते हैं मंत्री

फरीदाबाद (म.मो)हरियाणा के मुख्यमंत्री, खट्टर व अन्य मंत्री तथा विधायक ताबड़-तोड़ तरीके से जनता द्वारा टैक्स के लाखों करोड़ों रुपये से लगातार रोज नये-नये उद्घाटन करते नजर आ रहे हैं। जैसे हाल ही में एनआईटी स्थित बस स्टैंड की सैकड़ों करोड़ की जमीन को एक निजी कम्पनी को सौंपने का उदघाटन, बीके अस्पताल में अपने मित्र की संस्था 'शुद्ध रसोई' का उद्घाटन, अपनी पार्टी विधायक के जन्मदिन के अवसर पर सेक्टर 12 स्थित टाउन पार्क में पक्षी घर का उद्घाटन व अन्य ऐसे बहुत से हैं।

उद्घाटन करना इन मंत्री व विधायक के लिए बहुत आसान बात है, क्योंकि किसी भी उद्घाटन में किया गया खर्चा इनकी जेब से होता नहीं है, जनता का पैसा हैं खूब उड़ाओ, पर बात आती है व्यवस्था की जिसमें इस सरकार ने अपनी तो नाक कटबा ही रखी है और इसके साथ-साथ इन्होंने लोगो की नाक में भी दम कर रखा है। फरीदाबाद में ऐसा कोई शायद ही सेक्टर और कॉलोनी होगी जहां पीने के पानी, सीवरेज, नाली व टूटी फूटी सड़को की समस्या न हो, पर इन सभी हालातों के बारे में जब केंद्रीय मंत्री कृष्ण पाल गूर्जर से एक प्रेस कांफ्रेंस के दौरान इस संवाददाता द्वारा पूछा गया तो उन्होंने यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लिया की शहर में 40 साल पुरानी व्यवस्था को सुधारा जा रहा है इसलिये ऐसा हाल हैं। कुछ दिनों पहले

बीके अस्पताल में मंत्री गूर्जर के मित्र की एक संस्था 'शुद्ध रसोई' का उद्घाटन करने हेतु मंत्री अपने विधायक व अन्य दल-बल के साथ पहुंचे और एक भाषण भी दिया इसी दौरान संवाददाता ने उनसे बीके के सूरतेहाल का जिक्र किया जिसमे उन्होंने बताया की अस्पताल में दवाइयों का काफी अभाव है, कोई भी मरीज अगर यहाँ दवाई लेने आता है तो डाक्टरों द्वारा लिखी पांच दवाईयों में से दो ही मिल पाती हैं, बाकी उन्हें बाहर से खरीदना पड़ता हैं। इतना ही नहीं आपातकाल विभाग में तो कई बार चोट पर लगने वाली पट्टी भी मरीज को खुद खरीद कर लानी पड़ती है। यह सब सुनकर मंत्री बातो को अनदेखा सा करते हुए यह कहकर चलते बने की आपने बताया है इस पर गौर किया जायेगा।

सुधी पाठक इस बात को भली-भांति जान ले की इसी संवाददाता द्वारा इन मंत्री और इनके साथ आई विधायक सीमा त्रिखा को इस बात की जानकारी पांच बार दे चुकें है, पर इन्होने तो सिर्फ उद्घाटन की जिम्मेदारी ली हैं, व्यवस्था जाये भाड़ में।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।